Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education
Vol. XV, Issue No. 1, April-2018, ISSN 2230-7540

श्री शंकराचार्यकृत सौन्दर्यलहरी तथा आचार्य अमरनाथ पांडेयरचित सौंदर्यवल्ली की दार्शनिक पृष्ठभूमि का एक तुलनात्मक अध्ययन

Rajeev Kumar Gupta*

Research Scholar, Department of Sanskrit, SVN University Sagar (MP)

भूमिका – वैदिक संहिताओं में भारतीयदर्शन के जो मूलतत्व प्रथमावस्था में प्राप्त होते हैं उनका स्वरूप धार्मिक तथा कर्म काण्ड बहुल हैं उसके पश्चात भारतीय दार्शनिक विचार धारा का दूसरा काल उपनिषदों में प्राप्त होता हैं संहिता कालखण्ड का स्वाभाविक रूप से विकसित हुआ स्वरूप हैं ।

यह दूसरा अथार्त औपनिषदिक काल पूर्णतया दार्शनिक है। ब्राहाण ग्रंथों में देवताओं की आराधना का जो स्वरूप था उससे आगे चलकर मानव मस्तिष्क को संतोष मिल पाना वाधित होने लगा। मनुष्य की धार्मिक चेतना की भूख को शान्त प्रदान करने के लिए औपनिषदिक चिन्तन की उदय हुआ। बलि प्रधान कर्मकाण्डों की परम्परा से मनुष्य ऊबने सा लगा। इसलिए उसका चिन्तन परमात्मा, जीव तथा संसार के विषय में अधिक क्रियाशील हो गया। निष्कर्ष यह निकला कि केवल नाना प्रकार की 'बलि देने से देवताओं को संतुष्ट करके प्रसन्नता तथा आनन्द की प्राप्ति नहीं होगी। ज्ञान के द्वारा ही सांसारिक दुःखो से मुक्ति पाकर निरातिशय आनन्द की प्राप्ति की जा सकती हो। औपनिषदिक काल की दार्शनिक चिन्तन धारा का नाभिकीय विन्दु यही विचारधारा है । उपनिषदों ने अत्यन्त सरलता तथा सबलता के साथ सर्वोच्च चिन्तन पद्धति को प्रस्तुत किया है जो अन्यत्र आप्राप्य है।

----------X----------

उपनिषदों में उपनिबद्ध दार्शनिक चिन्तन के दो प्रकार का स्वरूप हमें प्राप्त होता है पहला वह जो आघशंकराचार्य ने अपने भाष्यों के माध्यम से प्रस्तुत किया है । तथा दूसरा वह जो शंकराचार्य के विचारों की समीक्षा के परिणाम स्वरूप परवर्ती आचार्यो ने प्रस्तुत किया है । संसार को असत बताने वाली मूल चिन्तन धारा प्रायः संपूर्ण वेदान्त दर्शन में विधमान है । यघपि भाषा की अवधारणा परवर्ती काल की देन हो सकती है ।

1. आचार्य का संक्षिप्त जीवन वृत्तान्त

डॉ. राधाकृष्णन के अनुसार शंकराचार्य के कुछ शिष्यों के द्वारा उनके जीवनव्रत से सम्बंधित वृत्तान्तों का संग्रह किया गया है जिनमें माधवकृत 'शंकर दिग्विजय' तथा आनन्द गिरि कृत 'शंकर विजय ' विशेष रूप से उल्लेखनीय है । वस्तुतः शंकराचार्य के जीवन से सम्बंधित वृत्तांतों के वर्णन का आधार मुख्यतः ये ही दोनों ग्रन्थ है । आचार्य शंकर का जन्म नम्बूदरी ब्राहण परिवार में हुआ था । इनके पितामह विघाधिराज थवा विघाधिप थे । पिता का नाम शिवगुरु था तथा आर्याम्बा आदि नामों में माधवकृत 'शंकर दिग्विजय ' विशिष्ट तथा आर्याम्बा आदि नामों में माधवकृत ' शंकर दिग्विजय ' में सती, नाम अत्यधिक प्रमाणिक माना जाता है । Krishnamachariar ने अपने History of Classical Sanskrit Literature में इनकी माता का नाम ' आर्याम्बा ' तथा आनन्द गिरि ने शंकर विजय ' में विशिष्टा नाम दिया है । दीर्घकाल तक निः सन्तान रहने के कारण शंकराचार्य के माता - पिता ने घोर तपस्या की । जिससे प्रसन्न होकर आशुतोष भगवान् शंकर ने ब्राह्मण के वेश में एक रात्रि को शिवगुरु को दर्शन देकर पुत्र प्राप्ति का वरदान दिया । अतः शिव के वरदान स्वरूप पुत्र को दर्शन देकर पुत्र प्राप्ति का वरदान दिया । अतः शिव के वरदान स्वरूप पुत्र प्राप्ति होने के कारण ही इनका नामकरण शंकर हुआ ।

www.ignited.in

शंकराचार्य का जन्म स्थान- शंकराचार्य का जन्म एक सम्पन्न बाह्राण कुल में शस्य श्यामला भारत भूमि की दक्षिण दिशा में स्थित केरल प्रदेश के कालटी नामक ग्राम में हुआ था प्रायः सभी विद्रानों ने यही मत व्यक्त किया है। कालादि इत्यादि नामों से भी उच्चायित किया जाता है। यह स्थान अपनी स्वास्थ्यकर जलवायु, सुन्दरता एवं पवित्रता के लिए प्रसिद्ध है। कल्टी ग्राम केरल में मालाबार तट पर कोचीन शोरानूर रेलवे लाइन पर स्तिथ है। आलबाई या आलुवा रेलवे स्टेशन से लगभग 6 मील की दूरी पर दक्षिण की ओर अलोइ या चूर्णी नदी के किनारे स्थित है। केरल में बहने वाली पेरियार नदी ने इस स्थान की रमणीयता में और भी वृद्धि कर दी है। आनन्दगिरि ने अपने ग्रंथ 'शंकर विजय' में चिदम्बरम को शंकराचार्य का जन्म स्थान माना है किन्तु डॉ. राधाकृष्णन के अनुसार इस मत को अधिक समर्थन प्राप्त नहीं है। कालटी को शंकराचार्य का जन्म स्थान सिद्ध करने के लिए निम्नलिखित तर्क प्रमाण स्वरूप दिए जाते है –

(1) नम्बूदरी ब्राह्राण कुल केरल प्रान्त का निवासी है जो की अत्यन्त प्राचीन काल से ही त्रिचूर के पास निवास कर रहा है । सम्पूर्ण केरल प्रदेश की यही मान्यता है की शंकराचार्य नम्बूदरी ब्राह्राण थे अतः शंकराचार्य का केरल का निवासी होना स्पष्ट रूप से सिद्ध होता है।

(2) उत्तराखण्ड में स्थित वर्तमान श्री बद्रीनाथ भगवान् की प्रतिष्ठा आचार्य शंकर ने की थी। इस मंदिर की पूजा व्यवस्था के लिए प्रधान पुजारी के रूप में उन्होंने नम्बूदरी ब्राह्राण की नियुकित की थी जिससे मंदिर की पूजा - अर्चना वेदोक्त विधि पूवर्क चलता रहे । तभी से लेकर आज तक नम्बूदरी ब्राह्राण परिवार के प्रधान ही इस मंदिर का संचालन करते आये है। इससे भी शंकराचार्य का केरल में अवतरण होना सिद्ध होता है ।

(3) शंकराचार्य ने जिस स्थान पर अपनी माता का दाह संस्कार किया था वह स्थान भी कालटी ग्राम में ही स्थित है । इस स्थान की पवित्रता को अक्षुण्ण बनाये रखने के लिए श्रंगेरी मठ की ओर से उपाय किये गये है ।

(4) माध्वमतानुयायी मणिमजारीकर त्रिविक्रमभ्ट्ट ने भी शंकराचार्य का जन्म स्थान कालटी ही बताया है। इन तथ्यों के आधार पर केरल प्रदेशान्तगर्त कालटी ग्राम ही शंकराचार्य की जन्भूमि सिद्ध होता है ।

2. वेदान्त दर्शन के अव्दैत तथा विशिष्टाव्दैत आदि मतों का विशिष्ट अनुशासन

कर्मकांड में चिहित यज्ञ, दान, तप, स्वाध्याय आदि कर्मो से जिनका हृदय विशुद्ध हो जो योग साघन द्वारा जितेन्द्रिय तथा विषयादिर्हित हो गए है, ऐसे उत्तम मुमुक्षु पुरुषो को अध्यात्म विद्या का उपदेश देने के लिए वेदान्त उत्तम अधिकारी के चिंतन का विषय है | जिसका अंत: करण एडिक तथा जन्मांतर के कर्म उपासना द्वारा शुध्द हो चुका है वही उत्तम अधिकारी है |

वेदान्त दर्शन का प्रतिपद्दा विषय जीव, जगत और ब्रह्मा के वास्तविक स्वरूपों का विवेचन तथा उनके पारस्परिक सम्बन्धो की मीमांत करना है | वेदान्त के अनुसार ब्रह्मा जगत का निमित कारण भी है और उपादान कारण भी | इसी एकीभाव के कारण वेदान्त को अव्दैतवादी दर्शन कहा जाता है | वेदान्त में इस नाना नाम रूपतामक भासमान जगत के मूल में अधिष्ठित होकर रहने वाले नित्य और निर्विकार ब्रह्म तत्व के स्वरूप का निरूपण है | वेदान्त के अनुसार जगत में जो नाना दृश्य दिखाई दे रहे है वे सब परिणामी और अनित्य है | वे बदलते रहते है किन्तु उनका ज्ञान प्राप्त करने वाला या द्रष्टा आत्मा सदा एक स्वरूप रहता है | ब्रह्मा नित्य स्वरूप या आत्मस्वरूप है | नाना ज्ञेय पदार्थ भी ज्ञाता के ही सगुण, सोपाधि या मायात्मक रूप है ऐसा जानकर ज्ञाता और ज्ञेय के व्दैत का वेदान्त समाधान कर देता है |

3. भक्ति वेदान्त के प्रकाश में उभय कृतियों का पर्यालोचन

भक्ति का स्वरूप

शास्त्रों में कहा गया है की लक्षण और प्रभाव से ही किसी वस्तु की सिध्दि हुआ करती है | लक्षण के बिना कोई वस्तु सिध्द नहीं हो सकता अत: शास्त्रकारों ने प्राय: सभी तत्वों का लक्षण वह तत्व है जो किसी पदार्थ की एक निश्चित सीमा निर्धारित करते हुए या उसे एक विशिष्ट स्वरूप प्रदान करते हुए उस पदार्थ को अन्य पदार्थ से पृथक करता है अत: भक्ति का भी लक्षण होना आवश्यक है |

वल्लभाचार्य के अनुसार भक्ति का स्वरूप

भक्ति वल्लभ दर्शन ला प्रमुख्य तत्व है | वल्लभाचार्य ने भक्ति की महता को स्पष्ट करते हुए कहा है की भक्ति मुक्ति का

www.ignited.in

अनिवार्य साधन है | इन्होने स्नेह को भक्ति का प्रमुख्य तत्व मन है तथा भक्ति को परिभाषित करते हुए लिखा है -

महात्मज्ञानपूर्वस्तु सूदृढ: सर्वतोऽधिक: |

स्नेहो भक्तिरीति प्राक्तस्या मुक्तिर्नचान्यथा |

अर्थात भगवान् का माहात्म्य जानकर उनमे सबसे अधिक दृढ स्नेह होना ही भक्ति है और उसी से मुक्ति होती है | मुक्ति का और कोई उपाय नहीं है |

4. सौंदर्यवली का तात्विक विश्लेषण तथा साहित्यिक अनुशीलन

सौंदर्यवल्ली का स्फुरण

किसी भी रचना के पूर्व करने वाले के हृदय में उस रचना की सूक्ष्म किरण स्फुरित होती है तो उस पूर्णता का कारण होती है | जिस प्रकार जगत की रचना करने से पहले निराकार परमात्मा के अंदर स्फुरणा हुआ कि मै अकेला हूँ, मुझे नाम रूपतामक सत्ता के रूप में साकार होना चाहिए - सोऽकामयत | बहुस्यां प्रजायेयेति | तत्सृष्ट्वा तादेवानुप्राविशत | (तैत्तिरियोपिषद)

5. आगमिक महत्व

भारतीय धर्म निगमागम मूलक है | जिस प्रकार भारतीय धर्म तथा संभ्यता नियम पर अवलम्बित है उसी प्रकार वह आगम पर भी अवलम्बित है | तंत्र कि विशेषता क्रिया है | वैदिक ग्रंथो में निर्दिष्ट ज्ञान का क्रियात्मक रूप या विधानात्मक आचार आगमो का मुख्य विषय है | वैदिकी तथा तांत्रिकी पूजा में अंतर यह है, जहाँ वैदिकी पूजा - पद्धति सर्वसाधारण के उपयोग के लिए है, वहाँ तांत्रिकी पूजा केवल चुने हुए कतिपय अधिकारी व्यक्तियों के लिए ही है | अत: वह सर्वथा तथा सर्वथा गोप्य रखी जाती है |

6. उपसंहार

वैदिकधर्म का उद्रार करने के लिए अवतरित भगवान् श्री शंकराचार्य ने वैदिककर्मकाण्डों की अतिवादिता एवं सकाम कर्मो की सुवर्ण शृंखला में बंधे मानव समाज को ज्ञान का मार्ग एवं भक्ति की निष्ठा की दीक्षा देने के लिए जो महान तप किया उसके लिए सारा संसार उनका कृतज्ञ हैं। वेदनिन्दक तथा अनात्मवादी बौध्दमत के मिथ्यातर्को के जाल का छेदन करना उनके सिवा अन्य किसी के वश का नहीं था। उन्होंने कर्मजन्य होने के कारण स्वगीदिसुलों को तुच्छ तथा पुनरावर्ती बताकर आत्मज्ञान के परम पुरुषार्थ सिद्ध किया |

सम्पूर्ण वेदान्त भाष्यों तथा उपनिषद एवं गीता भाष्यों का एकमात्र उद्देश्य लेकर की आत्मा नित्य, मुक्त , सच्चिदानन्द अनन्त तथा अदैत हैं एवं आत्मबोध हो साधक का परम पुरुषार्थ हैं ब्रह्म सत्य है तथा जीव और ब्रह्म में भेद नहीं हे |

चेतन आत्मतत्व जब अज्ञान से उपहित होकर देहादि से अथवा अन्त:करण से अलचिछन्न हो जाता है तब वह जीव भाव को प्राप्त होकर स्वयं को प्रकृति के गुणों द्वारा किये गये कर्मो तथा विकारों का कर्त्ता एवं भोक्ता मानकर सुख दु:खादि का अनुभव करके लगता हैं । हो सकता यह अनुभव मिथ्या तथा अविघाजन्य होने से अनित्य होता है । जब उसे अपने सहजस्वरूप को दर्शन होता है जब उसे इस सुखदुखात्मक संसार से मुक्ति मिल जाती हैं रस्सी में सपत्व बुद्धि कमे कारण जो भपजनपदु:ख होता उसका नाश होने पर अर्थात रस्सी का ज्ञान होने पर सपत्व का नाश हो जाने पर फिर वह भयजन्म दु:ख शेष नहीं रहा जाता हैं |

इसी प्रकार जीव को आत्मरूप का बोध होजाने पर जन्ममरणादि का संसार नष्ट हो जाता हैं और कृतार्थ जो जाता हैं |

संदर्भ ग्रन्थ सूची

A History of Sanskrit Literature – A MacDonell - 1972 Munshiram Munoharlal publishers Pvt. Ltd.

Bhaktisutras of Narada – Trans by Nandlal Sinha – 1998 Munshiram Munoharlal publishers Pvt. Ltd.

"सौन्दर्यवल्ली के विशेष संन्दर्भ में डॉ. अमरनाथ पाण्डेय की काव्य रचनाओं की समीक्षा " - शोधग्रंथ ईशादि नौ उपनिषद - गीताप्रेस गोरखपुर सं. 2038

कल्याण (शक्ति अंक) - गीता प्रेस , गोरखपुर सन 2047

कल्याण (शक्ति - उपासना अंक) गीता प्रेस गोरखपुर सन 1987

काव्यप्रकाश - परिशीलन - चौखम्भा सुरभारती प्रकाशन वाराणसी सन 1996

मंगल्या - डॉ . अमरनाथ पाण्डेय, भारतीय विघा प्रकाशन दिलली 1998

पुराणों में ज्ञान भक्ति वैराग्य - डॉ. रामजी चौबे (शोध प्रबंध) महात्मा गाँधी काशी विघापीठ वाराणसी वाराणसी सन 1986

श्री दुर्गासप्तशती - गीताप्रेस , गोरखपुर सं. 2058

भक्ति चंद्रिका - डॉ. श्री कृष्णमणि त्रिपाठी - चौखम्भा विद्या भवन, वाराणसी 2000

Corresponding Author

Rajeev Kumar Gupta*

Research Scholar, Department of Sanskrit, SVN University Sagar (MP)